INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EVOLUTIONARY RESEARCH

भारत–अफ्रीका संबंध: 21वीं सदी में बदलते आयाम और संभावनाएँ

रमन हलदार
शोधार्थी, अफ्रीकी अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

* Corresponding Author: **रमन हलदार**

Article Info

P-ISSN: 3051-3502
E-ISSN: 3051-3510
Volume: 07
Issue: 02
Received: 03-05-2026
Accepted: 02-06-2026
Published: 01-07-2026
Page No: 28-30

Abstract
भारत और अफ्रीका के संबंध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहे हैं। प्राचीन काल से ही दोनों क्षेत्रों के बीच समुद्री व्यापार, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और मानवीय संपर्क स्थापित रहे हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत और अधिकांश अफ्रीकी देशों ने उपनिवेशवाद, नस्लभेद तथा साम्राज्यवाद के विरुद्ध समान विचारधारा अपनाई, जिसने उनके संबंधों को और अधिक मजबूत बनाया। 21वीं सदी में वैश्विक शक्ति संतुलन में आए परिवर्तनों, वैश्वीकरण, ऊर्जा सुरक्षा, व्यापार, निवेश, समुद्री सुरक्षा तथा बहुपक्षीय सहयोग के कारण भारत–अफ्रीका संबंधों का महत्व लगातार बढ़ा है।
वर्तमान समय में भारत अफ्रीका का एक महत्वपूर्ण विकास साझेदार बन चुका है। भारत शिक्षा, स्वास्थ्य, डिजिटल प्रौद्योगिकी, कृषि, क्षमता निर्माण, रक्षा सहयोग तथा बुनियादी ढाँचे के विकास जैसे क्षेत्रों में अफ्रीकी देशों के साथ सक्रिय सहयोग कर रहा है। दूसरी ओर, अफ्रीका भारत के लिए ऊर्जा संसाधनों, खनिजों, उभरते बाजारों तथा वैश्विक दक्षिण (Global South) में रणनीतिक सहयोग का महत्वपूर्ण केंद्र है।
यह शोध-लेख 21वीं सदी में भारत–अफ्रीका संबंधों के बदलते स्वरूप, प्रमुख उपलब्धियों, चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

Keywords: भारत–अफ्रीका संबंध, वैश्विक दक्षिण, व्यापार, निवेश, समुद्री सुरक्षा, क्षमता निर्माण, भारत-अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन।

1. Introduction

भारत और अफ्रीका के संबंध केवल कूटनीतिक संबंध नहीं हैं, बल्कि यह साझा इतिहास, उपनिवेशवाद-विरोधी संघर्ष, विकास सहयोग और दक्षिण-दक्षिण सहयोग (South-South Cooperation) की मजबूत नींव पर आधारित हैं। दोनों क्षेत्रों के बीच सदियों से व्यापारिक और सांस्कृतिक संपर्क रहा है। भारतीय व्यापारी पूर्वी अफ्रीका के तटों तक पहुँचते थे, जबकि अफ्रीका से सोना, हाथीदांत और अन्य वस्तुएँ भारत लाई जाती थीं।
स्वतंत्रता के बाद भारत ने अफ्रीकी देशों के स्वतंत्रता आंदोलनों का समर्थन किया। महात्मा गांधी का दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह और नेल्सन मंडेला के रंगभेद-विरोधी संघर्ष ने दोनों क्षेत्रों के बीच विशेष भावनात्मक संबंध स्थापित किए।
21वीं सदी में अंतरराष्ट्रीय राजनीति और अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। चीन के बढ़ते प्रभाव, वैश्विक ऊर्जा की बढ़ती मांग, हिंद महासागर क्षेत्र के सामरिक महत्व तथा वैश्विक दक्षिण की उभरती भूमिका ने भारत और अफ्रीका के संबंधों को नई दिशा प्रदान की है। भारत आज अफ्रीका को केवल संसाधनों का स्रोत नहीं, बल्कि समान विकास और साझेदारी का भागीदार मानता है।
भारत की विदेश नीति में अफ्रीका का महत्व लगातार बढ़ा है। भारत-अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन (India-Africa Forum Summit) के माध्यम से दोनों पक्षों ने व्यापार, निवेश, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, डिजिटल तकनीक और रक्षा सहयोग को नई गति दी है। हाल के वर्षों में भारत ने अफ्रीकी देशों में अनेक विकास परियोजनाओं को वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान की है।

भारत–अफ्रीका संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत और अफ्रीका के संबंधों का इतिहास लगभग दो हजार वर्ष पुराना माना जाता है। प्राचीन काल में भारतीय व्यापारी अरब सागर और हिंद महासागर के समुद्री मार्गों से पूर्वी अफ्रीका के तटीय क्षेत्रों तक पहुँचते थे। इन व्यापारिक संबंधों के माध्यम से मसाले, वस्त्र, धातुएँ और अन्य वस्तुओं का आदान-प्रदान होता था।

1990 के दशक के बाद वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण के साथ भारत और अफ्रीका के संबंधों में आर्थिक सहयोग का महत्व तेजी से बढ़ा। 2008 में प्रथम भारत-अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसने द्विपक्षीय संबंधों को संस्थागत स्वरूप प्रदान किया। इसके बाद 2011 और 2015 में आयोजित शिखर सम्मेलनों ने व्यापार, निवेश, तकनीकी सहयोग तथा क्षमता निर्माण को नई दिशा दी।

आज भारत अफ्रीका में स्वास्थ्य सेवाओं, डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना, शिक्षा, कृषि, ऊर्जा, रक्षा सहयोग तथा मानव संसाधन विकास के क्षेत्रों में एक विश्वसनीय विकास साझेदार के रूप में उभरा है। दोनों पक्ष संयुक्त राष्ट्र सुधार, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद-रोधी सहयोग तथा वैश्विक दक्षिण की आवाज़ को मजबूत करने जैसे मुद्दों पर भी मिलकर कार्य कर रहे हैं।

21वीं सदी में भारत–अफ्रीका संबंधों के बदलते आयाम

21वीं सदी में भारत–अफ्रीका संबंधों में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिले हैं। पहले जहाँ ये संबंध मुख्य रूप से राजनीतिक समर्थन और ऐतिहासिक सहयोग तक सीमित थे, वहीं अब इनका दायरा व्यापार, निवेश, ऊर्जा सुरक्षा, रक्षा, समुद्री सुरक्षा, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, डिजिटल प्रौद्योगिकी और क्षमता निर्माण तक विस्तृत हो गया है।

भारत ने अफ्रीका के साथ अपने संबंधों को "विकास साझेदारी" (Development Partnership) के रूप में विकसित किया है। भारत का दृष्टिकोण अफ्रीकी देशों की आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं पर आधारित है। भारत बिना किसी राजनीतिक शर्त के तकनीकी सहायता, प्रशिक्षण, ऋण सहायता (Lines of Credit) और विकास परियोजनाओं में सहयोग प्रदान करता है। यही कारण है कि अफ्रीका के कई देशों में भारत को एक विश्वसनीय और दीर्घकालिक साझेदार के रूप में देखा जाता है।

भारत ने 2008, 2011 और 2015 में आयोजित **भारत-अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन (India–Africa Forum Summit)** के माध्यम से संबंधों को नई दिशा दी। विशेष रूप से 2015 का शिखर सम्मेलन ऐतिहासिक रहा, जिसमें अफ्रीका के सभी 54 देशों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में व्यापार, शिक्षा, स्वास्थ्य, डिजिटल कनेक्टिविटी, कृषि, कौशल विकास और बुनियादी ढाँचे के विकास पर विशेष बल दिया गया।

आर्थिक और व्यापारिक सहयोग

भारत और अफ्रीका के आर्थिक संबंध पिछले दो दशकों में तेज़ी से मजबूत हुए हैं। अफ्रीका भारत के लिए एक महत्वपूर्ण व्यापारिक भागीदार बन चुका है। भारत अफ्रीका से मुख्य रूप से कच्चा तेल, सोना, कोयला, तांबा, फॉस्फेट और अन्य खनिज आयात करता है, जबकि भारत अफ्रीका को दवाइयाँ, वाहन, मशीनरी, कपड़ा, पेट्रोलियम उत्पाद, सूचना प्रौद्योगिकी सेवाएँ और कृषि उपकरण निर्यात करता है।

भारत और अफ्रीका के बीच द्विपक्षीय व्यापार पिछले वर्षों में कई गुना बढ़ा है और यह लगभग **100 अरब अमेरिकी डॉलर** के स्तर तक पहुँच चुका है। भारत आज अफ्रीका के प्रमुख व्यापारिक साझेदारों में से एक है।

भारतीय कंपनियाँ जैसे **टाटा समूह, भारती एयरटेल, महिंद्रा एंड महिंद्रा, सन फार्मा, डॉ. रेड्डीज़, किर्लोस्कर** तथा अन्य कंपनियों ने अफ्रीका के विभिन्न देशों में निवेश किया है। ये कंपनियाँ दूरसंचार, ऊर्जा, दवा, कृषि, बैंकिंग और विनिर्माण क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

ऊर्जा और प्राकृतिक संसाधनों में सहयोग

भारत की बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं को देखते हुए अफ्रीका का महत्व लगातार बढ़ रहा है। नाइजीरिया, अंगोला, अल्जीरिया और मोज़ाम्बिक जैसे देश भारत के लिए तेल और प्राकृतिक गैस के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

इसके अतिरिक्त दक्षिण अफ्रीका, कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, जाम्बिया और घाना जैसे देशों में उपलब्ध सोना, तांबा, कोबाल्ट, लिथियम तथा अन्य महत्वपूर्ण खनिज भारत की औद्योगिक और हरित ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

भारत नवीकरणीय ऊर्जा, विशेषकर सौर ऊर्जा के क्षेत्र में भी अफ्रीकी देशों के साथ सहयोग बढ़ा रहा है। **अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (International Solar Alliance)** के माध्यम से भारत कई अफ्रीकी देशों को स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाओं में सहयोग प्रदान कर रहा है।

विकास साझेदारी और क्षमता निर्माण

भारत की विकास साझेदारी अफ्रीका में अन्य देशों से अलग मानी जाती है क्योंकि इसका उद्देश्य स्थानीय क्षमता का विकास करना है। भारत द्वारा प्रमुख सहयोग के क्षेत्र हैं—

- आईटी और डिजिटल शिक्षा
- कृषि तकनीक
- स्वास्थ्य सेवाएँ
- कौशल विकास
- छात्रवृत्तियाँ
- व्यावसायिक प्रशिक्षण
- ई-विद्याभारती और ई-आरोग्यभारती परियोजनाएँ
- भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग (ITEC) कार्यक्रम

हर वर्ष हजारों अफ्रीकी छात्र भारत के विश्वविद्यालयों में अध्ययन करते हैं तथा अनेक सरकारी अधिकारी और विशेषज्ञ भारत में प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। इससे दोनों क्षेत्रों के बीच मानवीय संबंध भी मजबूत हो रहे हैं।

राजनीतिक और कूटनीतिक सहयोग

21वीं सदी में भारत और अफ्रीका के राजनीतिक संबंधों में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। दोनों पक्ष लोकतंत्र, संप्रभुता, समानता, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और अंतरराष्ट्रीय कानून के सम्मान जैसे सिद्धांतों में विश्वास रखते हैं। संयुक्त राष्ट्र (UN), गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM), G-77, BRICS तथा अन्य बहुपक्षीय मंचों पर भारत और अधिकांश अफ्रीकी देश कई वैश्विक मुद्दों पर एक-दूसरे का समर्थन करते हैं।

भारत लंबे समय से संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में सुधार और विकासशील देशों को अधिक प्रतिनिधित्व देने की वकालत करता रहा है। अनेक अफ्रीकी देशों ने भारत की स्थायी सदस्यता की दावेदारी का समर्थन किया है। इसी प्रकार भारत भी अफ्रीकी संघ (African Union) की वैश्विक निर्णय-निर्माण संस्थाओं में अधिक भागीदारी का समर्थक रहा है। वर्ष 2023 में अफ्रीकी संघ को G20 की स्थायी सदस्यता मिलने का भारत ने सक्रिय समर्थन किया, जिसने भारत–अफ्रीका साझेदारी को और मजबूत किया।

रक्षा और समुद्री सुरक्षा सहयोग

हिंद महासागर क्षेत्र का बढ़ता सामरिक महत्व भारत और अफ्रीका के रक्षा सहयोग को नई दिशा दे रहा है। पूर्वी अफ्रीका के देशों—जैसे केन्या, तंज़ानिया, मोज़ाम्बिक, सेशेल्स और मॉरीशस—के साथ

भारत समुद्री सुरक्षा, तटरक्षक प्रशिक्षण, समुद्री निगरानी और आतंकवाद-रोधी सहयोग को लगातार बढ़ा रहा है।
भारत अफ्रीकी देशों के सैन्य अधिकारियों को प्रशिक्षण देता है तथा रक्षा संस्थानों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करता है। भारतीय नौसेना नियमित रूप से अफ्रीकी देशों के साथ संयुक्त अभ्यास, मानवीय सहायता (Humanitarian Assistance) और आपदा राहत (HADR) अभियानों में भाग लेती है।
समुद्री डकैती (Piracy), अवैध मछली पकड़ना, मानव तस्करी और समुद्री आतंकवाद जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए भारत और अफ्रीकी देशों के बीच समन्वय लगातार बढ़ रहा है। विशेष रूप से अदन की खाड़ी (Gulf of Aden) और पश्चिमी हिंद महासागर में भारतीय नौसेना की सक्रिय भूमिका क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण रही है।

शिक्षा और क्षमता निर्माण

भारत की विदेश नीति में शिक्षा और मानव संसाधन विकास को विशेष महत्व दिया गया है। भारत का मानना है कि किसी भी देश का दीर्घकालिक विकास केवल आर्थिक सहायता से नहीं, बल्कि कुशल मानव संसाधन के निर्माण से संभव है।
इसी उद्देश्य से भारत भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग (ITEC) कार्यक्रम के अंतर्गत हजारों अफ्रीकी अधिकारियों, इंजीनियरों, शिक्षकों और प्रशासनिक अधिकारियों को प्रशिक्षण प्रदान करता है।
इसके अतिरिक्त भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR) के माध्यम से हर वर्ष बड़ी संख्या में अफ्रीकी छात्रों को भारत के विश्वविद्यालयों में अध्ययन के लिए छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU), हैदराबाद विश्वविद्यालय और अन्य भारतीय संस्थानों में अनेक अफ्रीकी छात्र उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।
ई-विद्याभारती (e-VidyaBharti) परियोजना के माध्यम से भारत ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल प्रशिक्षण की सुविधा भी उपलब्ध करा रहा है, जिससे दूरस्थ क्षेत्रों के विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल रही है।

स्वास्थ्य क्षेत्र में सहयोग

स्वास्थ्य सहयोग भारत–अफ्रीका संबंधों का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन चुका है। भारत कम लागत पर उच्च गुणवत्ता वाली जेनेरिक दवाइयों का प्रमुख उत्पादक है और अनेक अफ्रीकी देशों को आवश्यक दवाइयाँ उपलब्ध कराता है।
कोविड-19 महामारी के दौरान भारत ने "वैक्सीन मैत्री" (Vaccine Maitri) पहल के अंतर्गत कई अफ्रीकी देशों को कोविड-19 टीके और चिकित्सा सामग्री उपलब्ध कराई। इस कदम की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक सराहना हुई और भारत की छवि एक जिम्मेदार विकास साझेदार के रूप में और मजबूत हुई।
भारत ई-आरोग्यभारती (e-ArogyaBharti) कार्यक्रम के माध्यम से टेलीमेडिसिन सेवाएँ, चिकित्सकीय प्रशिक्षण और स्वास्थ्य परामर्श भी प्रदान कर रहा है। इससे अफ्रीका के दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को विशेषज्ञ चिकित्सा सेवाओं तक पहुँच आसान हुई है।

वैश्विक दक्षिण (Global South) में साझेदारी

भारत और अफ्रीका स्वयं को वैश्विक दक्षिण (Global South) की आवाज़ मानते हैं। दोनों विकासशील देशों के हितों, जलवायु न्याय, खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, सतत विकास और समान वैश्विक शासन व्यवस्था की वकालत करते हैं।
हाल के वर्षों में भारत ने "Voice of Global South Summit" जैसे मंचों के माध्यम से अफ्रीकी देशों की चिंताओं को वैश्विक स्तर पर उठाने का प्रयास किया है। इससे भारत–अफ्रीका संबंध केवल द्विपक्षीय न रहकर वैश्विक सहयोग के महत्वपूर्ण आधार बन गए हैं।
.

संदर्भ

1. अफ्रीकी संघ। *अफ्रीका–भारत साझेदारी* [इंटरनेट]। अदीस अबाबा: अफ्रीकी संघ; 2024 [उद्धृत 2026 जुलाई 18]। उपलब्ध: https://au.int/en/partnerships/africa-india-partnership
2. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय। *भारत–अफ्रीका संबंध* [इंटरनेट]। नई दिल्ली: विदेश मंत्रालय; 2024 [उद्धृत 2026 जुलाई 18]। उपलब्ध: https://www.mea.gov.in/india-africa-relations.htm
3. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय। *भारत–अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन-III: दिल्ली घोषणा*। नई दिल्ली: विदेश मंत्रालय; 2015।
4. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय। *भारत–अफ्रीका विकास साझेदारी*। नई दिल्ली: विदेश मंत्रालय; 2023।
5. भारत सरकार, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय। *भारत–अफ्रीका व्यापार सांख्यिकी* [इंटरनेट]। नई दिल्ली: वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय; 2024 [उद्धृत 2026 जुलाई 18]। उपलब्ध: https://tradestat.commerce.gov.in
6. रिसर्च एंड इन्फॉर्मेशन सिस्टम फॉर डेवलपिंग कंट्रीज़ (RIS)। *भारत–अफ्रीका विकास सहयोग*। नई दिल्ली: आरआईएस; 2022।
7. शुबिन वी. *द हॉट कोल्ड वॉर: दक्षिणी अफ्रीका में सोवियत संघ की भूमिका*। लंदन: प्लूटो प्रेस; 2008।
8. नायडू एस. *भारत–अफ्रीका संबंध: नई साझेदारी की खोज*। ऑक्सफोर्ड: फहामू बुक्स; 2010।
9. ब्रॉडमैन एचजी. *अफ्रीका का सिल्क रोड: चीन और भारत की नई आर्थिक भूमिका*। वाशिंगटन, डी.सी.: विश्व बैंक; 2007।
10. संयुक्त राष्ट्र। *सतत विकास लक्ष्य (Sustainable Development Goals)* [इंटरनेट]। न्यूयॉर्क: संयुक्त राष्ट्र; 2024 [उद्धृत 2026 जुलाई 18]। उपलब्ध: https://sdgs.un.org
11. विश्व बैंक। *विश्व विकास संकेतक (World Development Indicators)* [इंटरनेट]। वाशिंगटन, डी.सी.: विश्व बैंक; 2024 [उद्धृत 2026 जुलाई 18]। उपलब्ध: https://data.worldbank.org
12. अफ्रीकी विकास बैंक। *अफ्रीकी आर्थिक परिदृश्य 2024 (African Economic Outlook 2024)* [इंटरनेट]। आबिदजान: अफ्रीकी विकास बैंक; 2024 [उद्धृत 2026 जुलाई 18]। उपलब्ध: https://www.afdb.org